शोध मंथन Vol. XI No.II Apr.-June. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

''व्यावसायिक कृषि प्रतिरूप''जनपद नवगाँव (असम)

आफ़ताब अहमद
शोध छात्र, भूगोल विभाग,
बुद्ध पी0जी0 कालेज, कुशीनगर
(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर)
Email: aftabluv123@gmail.com

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश में लगभग 121.08 करोड़ (2011) जनसंख्या निवास करती है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है कृषि से ही हमें भोजन और वस्त्र प्राप्त होता है। विकसित अर्थव्यवस्था की तुलना में एक विकासशील अर्थव्यवस्था में जनसंख्या का एक बड़ा प्रतिशत कृषि सम्बद्ध व्यवसायों में संलग्न रहता है। अतः स्पष्ट है कि कार्यशील जनसंख्या के एक बड़े भाग की खपत यहाँ कृषि क्षेत्र में ही होती है। यद्यपि यह हमारे अल्प विकास का सूचक है, क्योंकि इसमें विकास के साथ–साथ जनसंख्या उत्पादन के द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों की ओर अर्थात् निर्माण व सामाजिक सेवाओं की ओर गतिशील होती है।

मुख्य शब्दः *भारत, कृषि, जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, उत्पादन।*

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश में लगभग 121.08 करोड़ (2011) जनसंख्या निवास करती है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है कृषि से ही हमें भोजन और वस्त्र प्राप्त होता है। विकसित अर्थव्यवस्था की तुलना में एक विकासशील अर्थव्यवस्था में जनसंख्या का एक बड़ा प्रतिशत कृषि सम्बद्ध व्यवसायों में संलग्न रहता है। अतः स्पष्ट है कि कार्यशील जनसंख्या के एक बड़े भाग की खपत यहाँ कृषि क्षेत्र में ही होती है। यद्यपि यह हमारे अल्प विकास की सूचक है, क्योंकि इसमें विकास के साथ–साथ जनसंख्या उत्पादन के द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों की ओर अर्थात् निर्माण व सामाजिक सेवाओं की ओर गतिशील होती है।

सर्वप्रथम 1826 में वानथ्यूनेन ने अपने भूमि उपयोग के अवस्थिति सिद्धान्त में दूसरी पेटी को गहन कृषि और अधिक लाभ देने वाली फसलों के विकल्प के रूप में प्रतिपादित किया था। यद्यपि वानथ्यूनेन का यह भूमि उपयोग नगर के लिए था फिर भी इसमें व्यावसायिक कृषि का महत्व उजागर होता है।

व्यावसायिक कृषि व्यवस्था में कृषक का मूल उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लागत तथा आय दोनों प्रधान पहलू होते है जिससे शुद्ध लाभ राशि की जानकारी होती है। इस दृष्टिकोण

से कृषि एक क्रमबद्ध उद्यम है। जिसमें सभी क्रियाएँ उद्देश्यपूर्ण होती है। व्यावसायिक कृषि विकास का एक मुख्य आयाम है विपणन शक्तियाँ जिस मात्रा में क्षेत्र को व्याप्त करती है एवं जिस पैमाने पर वह सक्रिय होती है, सर्वथा कृषि विकास के लिए निर्णायक तत्व होती है। व्यावसायिक कृषि के दृष्टिकोण से खाद्यान्नों के व्यावसायिक उत्पादन की अपेक्षा नकदी फसलों के उत्पादन से व्यावसायीकरण के लिए एक निर्दिष्ट प्रयास के द्वारा कृषकों की मनोदशा को एवं उत्पादों में वृद्धि करके कृषि व्यावसायीकरण के लक्ष्य को सुगमतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। व्यावसायिक कृषि ग्रामीण विकास के मूल के साथ ही राष्ट्रीय विकास का कारण भी है। यहाँ उन सभी खाद्यान्न फसलों को सम्मिलित करने पर बल दिया गया है जिनके खाद्यान्न आपूर्ति से अतिरिक्त उत्पादन को बाजार केन्द्रों पर बेचकर मुद्रा अर्जित की जाती है। यहाँ व्यावसायिक फसलों में उदाहरण स्वरूप चाय को देखा जाये तो किसान नकदी फसल से अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाते हैं और गाँव के भूमिहीन गरीबों को काम मिल जाता है। इस प्रकार उनकी आर्थिक स्थिति सुधरती हुई प्रतीत होगी।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र नवगाँव जनपद ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। इसका विस्तार $25^0$45′ से $26^0$45′ उत्तरी अक्षांश एवं $91^0$50′ से $93^0$20′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। उत्तर में यह जिला ब्रह्मपुत्र नदी से घिरा हुआ है, पूर्वी में गोलाघाट, दक्षिण में कार्वी–एगलोंग और दीमा जिले तथा पश्चिम में मोरीगाँव जिले से घिरा हुआ है। जिले में 10 राजस्व मण्डल हैं, तथा ग्रामों की संख्या 1412 है। जनपद का क्षेत्रफल 3973 वर्ग किमी0 है, तथा यहाँ की कुल जनसंख्या 2823768 (2011) तथा जनघनत्व 711 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। चावल यहाँ के निवासियों का मुख्य भोजन है तथा यहाँ धान की मुख्य रूप से कृषि की जाती है जो पूरे वर्ष होती है। कृषि के अलावा मत्स्य पालन, केला एवं चाय उत्पादन मुख्य है। प्राकृतिक संसाधनों के निकाय के सन्दर्भ में अर्थव्यवस्था पूरी तरह कृषि पर निर्भर है जो मूल आबादी का 78 प्रतिशत अजीविका प्रदान करती है। हाँलाकि बाढ़ इस क्षेत्र के विकास में प्रमुख बाधा है। क्राडिट प्रवाह भी बहुत कम हो गया है, किन्तु अब इस पहलू में सुधार के लक्षण दिखने शुरू हो गये है, इस क्षेत्र में वर्तमान विपणन सम्बन्ध भी कमजोर है तथा औसत जमीन धारण भी कम (0.9 हे0) है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है –

1. अध्ययन क्षेत्र के वर्तमान कृषि परिदृश्य का विश्लेषण करना
2. व्यावसायिक कृषि से सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण करना
3. व्यावसायिक कृषि के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

आँकड़ों का स्रोत एवं विधितन्त्र

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। इस कार्य के लिए असम साख्यिकीय पुस्तिका, फसल उत्पादन प्रतिरूप, व्यावसायिक कृषि प्रतिरूप आदि का अध्ययन तथा आंकलन किया गया है।

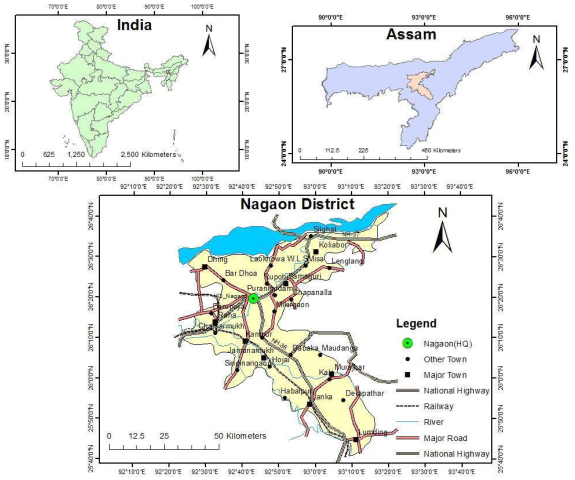

व्यावसायिक कृषि प्रतिरूप

कृषि व्यापारीकरण के शस्यगत आयाम के अन्तर्गत व्यावसायिक उद्देश्य से उगायी जाने वाली फसलों की विशेषताओं, क्षेत्रीय प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है। दत्ता और दास ने (1985, 1989), भगवती ने (1990) में असम में फसल की तीव्रता प्रतिरूप का विश्लेषण किया और जनसंख्या संरचना, घनत्व, सिंचाई सुविधाओं और भौतिक आधारों आदि के साथ सम्बन्ध स्थापित किए। नवगाँव जिले का फसल प्रतिरूप अत्यधिक असंतुलित है। जिले में मुख्य रूप से खाद्य फसलों की प्रबलता दिखाई देती है जो आम तौर पर कृषि भूमि पर काफी हद तक हावी होते है। बीते कुछ वर्षों में (2007–08 से 2015–16) फसलों के उत्पादन तथा कृषि क्षेत्र प्रतिरूप में बहुत अधिक बदलाव हुआ है। कृषक अत्यधिक उत्पादन एवं आवश्यकता के अनुसार ही फसलों को प्राथमिकता देता है। जैसे बीते वर्षों में जहाँ धान और सरसों के उत्पादन और क्षेत्र में वृद्धि हुयी है, वहीं गेहूँ और दाल फसलों में ह्रास हुआ है। इसके लिए यहाँ की जलवायु भी कुछ हद तक जिम्मेदार है क्योंकि धान उत्पादन के लिए जिले में अनुकूल जलवायु पायी जाती है।

तालिका

खाद्य फसल उत्पादन प्रतिरूप नवगाँव (असम)

क्रमांक	फसल	वर्ष (2007–08)		वर्ष (2015–16)	
		फसल क्षेत्र (हे0)	उत्पादन (टन)	फसल क्षेत्र (हे0)	उत्पादन (टन)
1	बसन्तकालीन धान	1965	25429	6780	8865
2	शीतकालीन धान	130754	186523	145438	314504
3	ग्रीष्मकालीन धान	42793	104808	43088	120369
4	गेहूँ	3100	2868	1289	1138
5	सरसों और तिल	16167	9412	14882	101777
6	अरहर	1214	831	585	435

Source : Directorate of Agriculture, Govt. of ASSAM

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि खाद्यान्न फसलों के उत्पादन और वितरण प्रतिरूप में विषमता आयी है बीते कुछ वर्षों में ठीक उसी प्रकार व्यावसायिक फसलों के उत्पादन में भी विषमता विद्यमान है जो कि नीचे ग्राफ द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

व्यावसायिक फसल उत्पादन प्रतिरूप नवगाँव (असम)

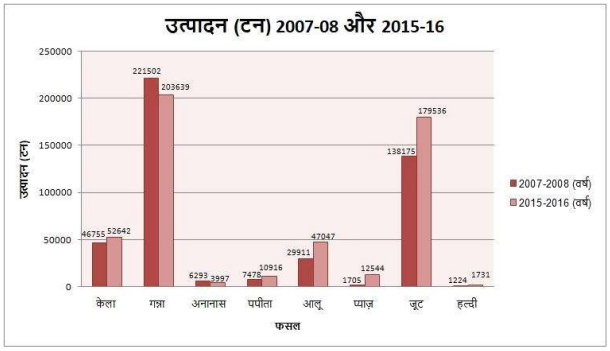

Source : Directorate of Economic and Statistics, Guwahati, ASSAM

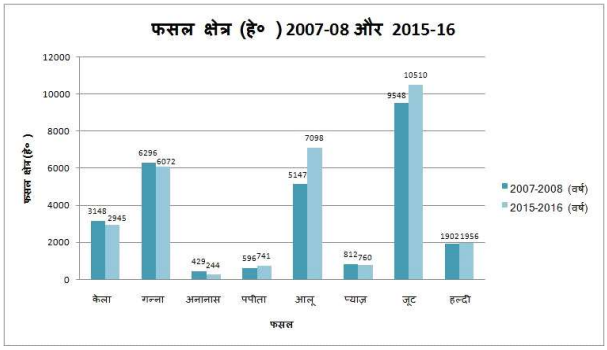

Source : Directorate of Economic and Statistics, Guwahati, ASSAM

असम के लोगों के आहार का एक अभिन्न हिस्सा मछली का है। यह राज्य भारत में कुल मछली उत्पादन का 5.7 प्रतिशत उत्पादन करता है। नवगाँव जनपद 24,000 मीट्रिक टन प्रति वर्ष मछली का उत्पादन करता है, जो राज्य के कुल उत्पादन का 10 प्रतिशत है। पहले कुछ सामाजिक कारकों के कारण मछली पकड़ने के व्यवसाय को सम्मानजनक नहीं माना जाता था लेकिन वर्तमान समय में बेरोजगार युवा मछली पकड़ने के व्यवसाय को सभ्य आजीविका विकल्प के रूप में देख रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में एक्वाकल्यर तकनीकों के विकास से 10000–15000 किग्रा0 प्रति हेक्टयर प्रतिवर्ष मछली का उत्पादन किया जा रहा है।

विश्लेषण

अध्ययन क्षेत्र में 2006–07 से 2015–16 के बीच के वर्षों का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि खाद्यान्न फसलों में बसन्तकालीन धान के क्षेत्रफल में 4815 हे0 की वृद्धि हुई लेकिन 16564 टन उत्पादन घटा, जबकि शीतकालीन धान में 14684 हे0 क्षेत्रफल एवं उत्पादन में 127981 टन हुई जो कि कुल धान उत्पादन में सर्वाधिक है। जबकि गेहूँ के क्षेत्रफल में 1811 हे0 क्षेत्रफल का ह्रास हुआ एवं उत्पादन में भी ह्रास देखा गया। सरसों और तिल में जहाँ उत्पादन में वृद्धि देखी गयी वहीं, दलहन फसल उत्पादन ह्रास की ओर उन्मुख रहा। व्यावसायिक फसलों के अन्तर्गत मुख्य रूप से केला के क्षेत्रफल में 203 हे0 का ह्रास हुआ जबकि उत्पादन में 5887 टन की वृद्धि दर्ज हुई, वहीं गन्ना में 224 हे0 क्षेत्रफल का ह्रास हुआ लेकिन उत्पादन में इसमें भी वृद्धि देखी गयी, व्यावसायिक फसलों में प्याज, जूट, कपास, कालीमिर्च, हल्दी आदि में वृद्धि दर्ज की गयी जबकि सन्तरा, तम्बाकू, अनानास आदि में ऋणात्मक वृद्धि देखी गयी।

निष्कर्ष

आधुनिक वैज्ञानिक युग में सभी उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु नये तकनीकी ज्ञान, संयत्रों की खोज, नये किस्म के बीज, उर्वरक आदि की खोज तथा विकास किया जा रहा है। वर्तमान उपलब्धियों से व्यावसायिक कृषि पूर्ण रूप से प्रभावित है। जिले में मत्स्य क्षेत्र की उपलब्धता है लेकिन व्यावसायिक सिद्धान्तों पर मछली पकड़ने की अनुपस्थिति है, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकता का स्तर कम है। ठीक इसी प्रकार गन्ना और केला आदि के लिए मौसमी दशाएँ अनुकूल है। इस क्षेत्र के किसानों को सही तरीके से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। जिससे वे अधिकाधिक व्यावसायिक कृषि एवं उन्नत तकनीकों का उपयोग करके अधिक लाभ अर्जित कर सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 Randhwa, M.S. (1974) : Agricultural Research in India, New Delhi, 2nd Ed.

2 Das, M.M. (1984) : Peasant Agriculture in Assam, A Structural Analaysis, Inter-India Publication, New Delhi.

3 पाण्डेय रविन्द्र कुमार (2000) : *''पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ'*, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

4 सिंह, पूजा (2012) : *''कृषि आधारित उद्योग एवं ग्रामीण विकास''* अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

5 Saikia Dibyajyoti (2014) : *Agricultural Development in Nagaon District*, Assam, Unpublished Ph.D Thesis, University of Guwahati.

6 *Directorate of Economic and Statistics*, Guwahati, Assam.

7 *Directorate of Agriculture,* Govt. of Assam, 2007 to 2017.

8 वर्मा, रजनी (2014) : *''गोरखपुर मण्डल में ग्रामीण उद्योगों की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ'* अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

9 *District Census Handbook Nagaon*- Assam, 2011.